परिचय

कुलुस्सियों की पुस्तक

कुलुस्सियों की पुस्तक मसीही साहित्य के महान कामों में से एक है। इसमें वे निर्देश हैं जो हर युग के मसीही लोगों के लिए आवश्यक हैं और बाइबल के मुख्य विषयों पर स्पर्श है। इन विषयों में से सबसे महत्वपूर्ण विषय शायद यीशु की ऊंची की गई प्रकृति है, जो परमेश्वर का स्वरूप है। स्वभाव से वह परमेश्वर है, उसके पास ईश्वरीयता की भरपूरी है कलीसिया का सिर है और सब का सृष्टिकर्त्ता है। यीशु स्वर्ग की हमारी आशा का देने वाला और प्रार्थना में उत्तर का हमारा आश्वासन है। वह पापों की क्षमा, जीवन का नयापन और जीवन, नैतिकता और आत्मिकता की दिशा देता है।

पौलुस ने स्वस्थ पारिवारिक सम्बन्धों के लिए परमेश्वर का नमूना बताया है। उसने मसीह के बजाय मनुष्य की फ़िलॉसफ़ी और परम्पराओं को मानने के विरुद्ध चेतावनी भी दी। कुलुस्सियों 3:23, 24 में उसने मसीही लोगों के लिए जीने की एक बात बताई: ''जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।''

पत्र इस अर्थ में व्यक्तिगत है कि इसके लिखे जाने के पीछे कई लोग थे। अरिस्तर्खुस, मरकुस, यूस्तुस, इपफ्रास, लूका और देमास नामक छह अन्य लोगों (4:10–14) के साथ जिन्हें कुलुस्से के भाइयों को सलाम भेजा, लेखक के पास तीमुथियुस था। तुखिकुस जिसने पत्र देना था, कुलुस्से से एक दास उनेसिमुस जिसने उसके साथ रहना था का नाम भी था (4:7–9)। अर्खिप्पुस (4:17), जिसे माना जाता है कि उसने कुलुस्से में रहना था के नाम एक व्यक्तिगत संदेश शामिल था। उनेसिमुस के स्वामी फिलेमोन के नाम पत्र में उसका भी नाम था (फिलेमोन 1, 2)।

लेखक

भीतरी और बाहरी प्रमाण कुलुस्सियों के पत्र के लेखक के रूप में पौलुस की ओर संकेत करते हैं। 1800 के दशक तक किसी ने उसके लेखक होने पर संदेह नहीं किया। पौलुस के लेखक होने को ठुकराने वाली पहली लिखित बात अर्न्सट थियोडोर मेयर होप, *डेर ब्रीफ एन डाई कोलोसर* के प्रकाशन में पहली बार 1838 में मिली।[1] उसके बाद से कुछ और लेखकों ने उसके निष्कर्ष को मान लिया है, परन्तु अधिकतर विद्वान पौलुस को ही लेखक मानते हैं। लेखक के रूप में पौलुस के बारे में आपत्तियां शैली, शब्दावली और डॉक्ट्रिन की कुछ बातों के आधार पर हैं। प्रमुख तर्कों में से एक यह है कि यह पत्र दूसरी शताब्दी के विधर्म नॉस्टिक शिक्षा का खण्डन करने के लिए लिखा गया था और इसके पौलुस द्वारा लिखे होने की बात भी बहुत देर की है। (इस पाठ में आगे ''आरम्भ का स्थान और समय'' पर चर्चा देखें।) ऐसी कोई भी आपत्ति पौलुस के लेखक होने का संकेत देते प्रमाण के भार से दब जाती है।

बाहरी प्रमाण

बाहरी प्रमाण पौलुस के लेखक होने का अत्यधिक पक्ष लेता है और दिखाता है कि इस पत्री को पहले परमेश्वर की प्रेरणा पाए धर्म शास्त्र के रूप में स्वीकृत किया जाता है। हेनरी क्लेरेंस थियसन ने[2] इस प्रमाण को संक्षिप्त किया है:

- इग्नेशियस (ईस्वी 110) ने *एपिस्टल टू द इफिसियंस* नाम अपनी पुस्तक में (अध्याय 10) कुलुस्सियों 1:23 की बात की हो सकती है।
- ईस्वी 130 के लगभग लिखी गई *द एपिस्टल ऑफ़ बरनाबस,* कुलुस्सियों 1:16 की बात करती हुई लगती है।
- जस्टिन मार्टिर (ईस्वी 150) ने कुलुस्सियों 1:15 में पाई जाने वाली अभिव्यक्ति ''सारी सृष्टि में पहलौठा'' का इस्तेमाल अपनी पुस्तक *डायलॉग विद ट्रायफो* (अध्याय 84; 85; 138) में कई बार किया।
- अन्ताकिया के थियोफिलस (ईस्वी 180) ने अपनी पुस्तक *टू आटोलिकुस* (2.22) में एक बार इसी अभिव्यक्ति ''सारी सृष्टि में पहलौठा'' में इस्तेमाल किया।
- इरेनियुस (ईस्वी 180) ने *अगेंस्ट हेयरसीज़* (3.14.1) में कहा कि पौलुस ने कुलुस्सियों में लिखा, ''प्रिय वैद्य लूका को नमस्कार।'' यह बात कुलुस्सियों 4:14 में मिलती है।
- सिकन्द्रिया का क्लेमेंट जो ईस्वी 150–215 के लगभग हुआ ने *स्ट्रोमाटा* 1.1 में कुलुस्सियों 1:28 में पौलुस की कही बात बताया। *स्ट्रोमाटा* 4.7 में भी उसने 3:12, 14, 15 को और *स्ट्रोमाटा* 5.10 में 4:2–4 को दोहराया।
- टरटुलियन (ईस्वी 200) ने *प्रेस्क्रिप्शन अगेंस्ट हेयरटिक्स* (अध्याय 7) में कुलुस्सियों 2:8 और *रिज़रक्शन ऑफ़ द फ्लेश* (अध्याय 23) में 2:12, 13 को उद्धृत किया।
- ओरिगन (ईस्वी 225) ने *अगेंस्ट सैल्सस* (5:8) में कुलुस्सियों के पत्र को उद्धृत करते और पौलुस को इसका श्रेय देते हुए 2:18, 19 के शब्दों को उद्धृत किया।
- प्राचीन लातीनी और प्राचीन सीरियाई भाषा में मार्सिया के कैनन में कुलुस्सियों के नाम पत्र शामिल था। म्युरेटोरियन खण्ड में इसका उल्लेख है (ईस्वी 170)।

यह पत्र चेस्टर डियेटी कोडेक्स (जिसे पी 46 बताया गया है) के साथ–साथ दूसरी शताब्दी के प्राचीन लातीनी संस्करणों में मिलता है जिनका आरम्भ दूसरी शताब्दी के अन्त के निकट मिस्र में हुआ था।

भीतरी प्रमाण

भीतरी प्रमाण भी पौलुस के लेखक होने का संकेत देता है।

पहले तो 1:1 में लेखक ने स्वयं अपना परिचय सोलुस के रूप में किया। बाद में उसने अपने आपको पौलुस कहा (1:23), और पत्र का समापन यह कहते हुए किया, ''मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार'' (4:18)।

दूसरा कुलुस्सियों के नाम पत्र फिलेमोन के नाम पत्र से बहुत मिलता-जुलता है जिसे आम तौर पर पौलुस का लिखा माना जाता है। दोनों पत्रों में उन्हीं पांच लोगों के लेखक के साथ होने की बात मिलती है (कुलुस्सियों 4:10-14; फिलेमोन 23, 24)। कुलुस्सियों में अर्खिप्पुस को समझाया गया था, ''जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना'' (4:17)। फिलेमोन में पौलुस ने उसे ''हमारे साथी योद्धा'' (आयत 2) के रूप में बताया।

डोनल्ड गुथरी की फिलेमोन के साथ कुलुस्सियों की तुलना से पौलुस को इसके लेखक के रूप में पहचानने में सहायता मिलती है। यह कहने के बाद कि बाहरी स्रोतों से पौलुस के इसका लेखक होने का संकेत मिलता है, उसने लिखा:

> पत्री और फिलेमोन के निकट कड़ी को जिसकी प्रामाणिकता को केवल अत्यधिक नकारात्मक आलोचकों द्वारा चुनौती दी गई है, मज़बूत बाहरी प्रमाण को और समर्थन मिलता है। इस कड़ी को बनाए रखने के कारण इस प्रकार हो सकते हैं।
>
> 1. पौलुस के साथ तीमुथियुस का नाम आरम्भिक नमस्कार दोनों में है (कुलुस्सिससयों 1; फिलेमोन 1)।
>
> 2. दोनों पत्रों में नमस्कार अरिस्तर्खुस, मरकुस, लूका और देमास की तरफ़ से भेजे गए जो स्पष्टतया सभी इस समय पौलुस के साथ थे (कुलुस्सियों आयत 10-14; फिलेमोन 23, 24)।
>
> 3. फिलेमोन 2 में अर्खिप्पुस को साथी योद्धा और कुलुस्सियों 4:17 में उसे अपनी सेवकाई को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
>
> 4. कुलुस्यिों 4:9 में उनेसिमुस का नाम तुखिकुस के साथ भेजे गए के रूप में है और उसे ''तुम ही में से'' बताया गया है।
>
> इन आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए यह कल्पना करना असम्भव है कि दोनों पत्रियां अलग-अलग समयों में भेजी गई होंगी, और क्योंकि फिलेमोन की प्रामाणिकता पर आम तौर पर कोई सवाल नहीं उठता। इस कारण यह पक्का है कि कुलुस्सियों पौलुस का वास्तविक काम है।[3]

चाहे कुछ लोग यह तर्क देंगे कि कुलुस्सियों में पाई जाने वाली शिक्षा गलातियों और इफिसियों में पौलुस के लेखों से भिन्न है परन्तु समानताएं इतनी अधिक हैं कि ऐसी आपत्तियों का महत्व नहीं रहता।[4] इस पाठ के अन्त में दिए गए चार्ट में तीनों पुस्तकों की बहुत सी समानताओं का एक नमूना मिलता है।[5]

कुलुस्सियों की विलक्षण शब्दावली और शैली की अन्य भिन्नताओं के सम्बन्ध में यह ध्यान दिया जाए कि ये विशेषताएं कुलुस्से से विशेष रूप से जुड़ी समस्याओं के साथ केवल पौलुस के व्यवहार में मिलती हैं। उदाहरण के लिए इफिसियों की आवश्यकताएं कुलुस्से के लोगों की आवश्यकताओं से अलग थीं। कर्टिस वॉन ने ध्यान दिलाया है कि इफिसियों और कुलुस्सियों में दिए जाने वाले ज़ोर में अन्तर है:

> ... इफिसियों में बल मसीह की देह के रूप में *कलीसिया* पर है; कुलुस्सियों में

> कलीसिया के सिर के रूप में जोर *मसीह* पर है। ... कुलुस्सियों स्पष्ट, प्रत्यक्ष और अण्डाकार है; इफिसियों शिक्षात्मक और सामान्य है। कुलुस्सियों ''... चर्चा का पत्र'' है; इफिसियों ''विचार का पत्र'' है।[6]

बेशक कुछ अन्तर तो हैं परन्तु कुलुस्सियों में अधिकतर ढंग पौलुस के हैं। भीतरी प्रमाण का वज़न, गलातियों, इफिसियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन के एक ही लेखक के होने का संकेत करता है।

आरम्भ का स्थान और समय

पौलुस ने कुलुस्सियों की पुस्तक तब लिखी जब वह जेल में था (4:3, 10, 18; देखें इफिसियों 3:1; 4:1; 6:20; फिलिप्पियों 1:7, 13, 14, 16; फिलेमोन 1, 9, 10, 13)। जेल में उसका सबसे अधिक समय तक रहना कैसरिया (प्रेरितों 24:27) और रोम (प्रेरितों 28:30) में हुआ। मिशनरी के रूप में उसने एक ही स्थान में सबसे अधिक समय इफिसुस में बिताया (प्रेरितों 20:17, 31)। इसलिए कुलुस्सियों के लिखे जाने के लिए सम्भावित स्थानों के रूप में इन्हीं तीन नगरों का नाम सबसे अधिक लिया जाता है।

इफिसुस का पक्ष लेने वाले कहते हैं कि यह अन्य नगरों की तुलना में कुलुस्से के अधिक निकट था इस कारण पौलुस को कलीसिया की खबर आसानी से और किसी भी प्रकार की समस्या की खबर, जो उनके सामने होती होगी उन्हें मिल जाती होगी। यदि पौलुस बेतनिय्याह या रोम के बजाय इफिसुस में था तो इपफ्रास को पौलुस को बताने के लिए उसके पास जाने में अधिक समय नहीं लगता होगा (कुलुस्सियों 1:7)। फिलेमोन 22 में पौलुस ने विनती की कि उसके ठहरने का स्थान तैयार रखा जाए, जो पौलुस के लिए निकट स्थान का संकेत दे सकता है।

परन्तु इफिसुस को नकारा जा सकता है क्योंकि हमारे पास कोई पक्का प्रमाण नहीं है कि इफिसुस में परिश्रम करते समय वह जेल में था (प्रेरितों 20:31)। इफिसुस में ''वन पशुओं'' से लड़ने का उसका हवाला (1 कुरिन्थियों 15:32) यह साबित नहीं करता कि वह जेल में था। यदि मरकुस और लूका के सलाम इफिसुस से थे (कुलुस्सियों 4:10, 14) तो वह प्रेरितों के काम से मेल नहीं खा सकता, जिसमें पौलुस के इफिसुस में रहते समय उनके उसके साथ होने का कोई उल्लेख नहीं है (प्रेरितों 19)। लूका पौलुस के कुलुस्सियों का पत्र लिखने के समय उसके साथ था (कुलुस्सियों 4:14); परन्तु प्रेरितों 19 में ''हम'' वाले वचनों का न होना इस बात का संकेत है कि प्रेरितों के काम का लेखक लूका पौलुस के इफिसुस में रहते समय उसके साथ नहीं था। वह रोम में अवश्य पौलुस के साथ गया था (प्रेरितों 27:1; 28:16)।

यह मानने वालों का कि पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम पत्र कैसरिया में जेल में रहते समय लिखा विचार है कि उस समय अरिस्तर्खुस और तुखिकुस पौलुस के साथ रहे होंगे। वे यरूशलेम में जाने के समय पौलुस के साथ थे (प्रेरितों 20:4) और उसके वहां रहते समय उसके साथ सेवा करने के लिए वे कैसरिया में उसके साथ चले गए होंगे (24:23)।

कैसरिया को भी उस स्थान के रूप में निकाला जा सकता है जहां पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम पत्र लिखा। प्रचार की सेवकाई जिसका संकेत उसने 1:28, 29 में दिया प्रेरितों के काम में

कुलुस्सियों, इफिसियों और गलातियों में मिलती-जुलती शिक्षाएं

	कुलुस्सियों	इफिसियों	गलातियों
1. मसीही लोगों के लिए भीतरी सामर्थ	1:11	3:16	
2. कलीसिया का सिर मसीह	1:18; 2:19	1:22, 23 4:15; 5:23	
3. मसीह की प्राथमिकता	1:18	1:20-22	
4. मसीह की परिपूर्णता	1:19; 2:9	1:23; 3:19	
5. मसीह के द्वारा मसीही लोगों की पवित्रता मसीह	1:21, 22	5:25-27	
6. बीते युगों का भेद: अन्यजातियों का शामिल किया जाना	1:26, 27; 2:2; 4:3	1:9; 3:3-9; 6:19	
7. बपतिस्मा लेने वालों का विश्वास के द्वारा शुद्ध किया जाना	2:12, 13	5:26	3:26, 27
8. मसीह के साथ एक नया जीवन	2:13; 3:1	2:5, 6	
9. व्यवस्था के नियमों का मिटाया जाना	2:14	2:14, 15	3:24, 25
10. अब विशेष धार्मिक दिनों की आवश्यकता नहीं है	2:16	4:10	
11. मसीही लोगों का मसीह को पकड़े रहना और झूठी शिक्षाओं के अधीन न होना आवश्यक है	2:18-20	4:13-15	
12. सिर से मिलने वाली सहायता से देह का बनाया जाना	2:19	4:16	
13. बुरे अतीत को उतारकर नये जीवन को पहन लेना	3:8-14	4:22-26	
14. एक देह के रूप में काम करने के लिए मसीही लोग	3:15	2:16; 4:4	
15. गाने के सम्बन्ध में निर्देश	3:16	5:19	
16. जीवन साथी, बच्चों, स्वामियों और सेवकों के लिए निर्देश	3:18—4:1	5:23—6:9	

उसके कैसरिया में रहते समय इसके होने का उल्लेख नहीं है। पौलुस ने नज़रबन्द रहकर रोम में कम से कम अढ़ाई वर्ष तक प्रचार किया (प्रेरितों 28:16, 30, 31)। यदि पत्र कैसरिया में लिखा गया तो मरकुस की उपस्थिति (कुलुस्सियों 4:10) को बता पाना और प्रेरितों के काम के साथ मिला पाना कठिन है। मरकुस पौलुस को छोड़कर कुपरुस में बरनबास के साथ चला गया था (प्रेरितों 15:39)।

बहुत सम्भावना है कि कुलुस्सियों के नाम पत्र लिखते समय पौलुस रोम में था। यह विचार सबसे पहले 375 ईस्वी में क्रिसोस्टोम द्वारा व्यक्त किया गया था।[7] इससे पौलुस और मरकुस के बीच सुलह के लिए समय मिल गया होगा। फिलिप्पियों में जो जेल में से लिखी गई थी पौलुस

ने ''राज भवन की पलटन'' और ''कैसर के घराने'' का उल्लेख किया (फिलिप्पियों1:13; 4:22)। इन शब्दों का इस्तेमाल इस बात का संकेत है कि फिलिप्पियों के नाम लिखते समय पौलुस रोम में था।

यदि पौलुस यह पत्र लिखते समय इफिसुस में था तो लिखे जाने का समय लगभग ईस्वी 52 से 54 होगा। यदि उसने कैसरिया में जेल में रहते समय इसे लिखा तो समय लगभग ईस्वी 57 से 59 होगा।[8] यदि जैसा कि निष्कर्ष निकाला गया है, उसने रोम में जेल में रहते लिखा तो समय लगभग ईस्वी 60 से 62 होगा।

गन्तव्य

यह पत्र कुलुस्से में रहने वाले मसीही लोगों के नाम लिखा गया। यूनानी भाषा में कुलुस्से के दो अलग-अलग शब्दजोड़ हैं, *Kolossai* और *Kolassai* प्राचीन हस्तलिपियों और शिलालेखों में दोनों मिलते हैं। पहले वाला शब्द जोड़ शायद पुराना रूप है और बाद वाला पत्र के लिखे जाने के समय में उपयोग होता था। इसका नाम उस इलाके में पत्थरों के आकार के कारण एक बड़ी मूर्ति *colossus* से लिया गया हो सकता है। एक और सम्भावित व्याख्या है कि यह नाम स्थानीय ऊन उपभोक्ता के कारण बना हो सकता है। वहां रहने वाले रंगदार वस्त्र के लिए यूनानी शब्द *colossinus* है जिसका अर्थ है ''बैंजनी।''[9]

कुलुस्से परगुमम राज्य के इलाके फ्रूगिया का एक नगर था। इसके पास दो प्रभावशाली नगर थे: बारह मील पश्चिम में लौदीकिया और तेरह मील उत्तर-पश्चिम में हियरापुलिस था। कुलुस्सियों के नाम पौलुस के लिखने के समय दोनों नगरों में मसीही समाज पाया जाता था (कुलुस्सियों 2:1; 4:13-16)। इफिसुस जिस में इन से पहले सुसमाचार सुनाया गया हो सकता है, पश्चिम की ओर लगभग 120 मील था। रोम पहली सदी के मार्गों के द्वारा लगभग एक हज़ार मील दूर था। (''पौलुस के समय का रोमी संसार'' मानचित्र देखें।)

लियेंडर नदी की एक सहायक लूकस नदी के दक्षिणी किनारे पर एक अक्रोपुलिस था। कुलुस्से दर्रे के पास था, जहां दो चश्मे एक जगह मिलते थे। पानी में चूने के पथरों में कार्बोहाइड्रेट की असामान्य मात्रा थी जिससे किनारों के पास शानदार पपड़ियां बन जाती थीं जो कपड़ा रंगने के लिए आदर्श था। दक्षिण की ओर तीन मील, नगर के ऊपर 8,435 ऊंचा होनाज़दाग (कदमुस पहाड़ था) और उत्तर में मोसीना रेंज था। नीरो के शासनकाल में 61 ईस्वी में एक भूकम्प[10] ने लौदीकिया को बुरी तरह से नष्ट या अपंग बना दिया और कुलुस्से और हियरापुलिस को भी प्रभावित किया होगा। लिकुस तराई को भूकम्पों और ज्वालामुखी प्रभावित इलाका था।[11]

मसीह से कई सदियां पहले कुलुस्से फ्रूगिया के इलाके के धनवान नगरों में से एक ओर इफिसुस से फरात नदी के प्रमुख मार्ग पर एक अग्रणी नगर था। इसका महत्व इस तथ्य में देखा जाता है कि 481 ई. पू. में क्षयरश और बाद में 401 ई. पू. में कुस्त्रु छोटा नामक दो सैनिक अगुवे वहां गए थे।

फारसी सम्राट हेरोदोतस की सम्राट क्षयरश (485-465 ई.पू.) जिसे एस्तेर की पुस्तक में ''क्षयर्श'' कहा गया है (1:1) सारस से यूनान पर आक्रमण के लिए जाने पर कुलुस्से से होकर गुज़रा था। बाद में कुस्त्रु छोटे के अधीन चतुर जवान सैनिक ज़िनोफोन (401 ई.पू.) ने

एक अभागे मारच को लिखा जिस में कुस्त्रु सरदीस से अपनी सेना के उत्तर-पूर्व में बढ़ने के समय कुलुस्से में सात दिन तक ठहरा था। ज़िनोफोन ने कुलुस्से को ''निवासयोग्य बड़ा नगर बताया।''[12] हेरोदोतस ने कुलुस्से को फ्रूगिया का एक बड़ा नगर कहा।[13]

कुलुस्से के आरम्भिक निवासी स्थानीय फ्रूगी लोग और बाहर से बसे यूनानी थे। दूसरी शताब्दी ई.पू. के आरम्भ में अन्तियोकुस तृतीय (महान) ने मेसोपोतामिया और बाबुल से दो हज़ार यहूदी परिवार लुदिया और फ्रूगिया में मंगवाए।[14] जे. लाइटफुट ने यहूदियों द्वारा दिए जाने वाले मन्दिर के कर के आधार पर एक और संकेत दिया कि लूकस तराई में यहूदियों की एक बड़ी संख्या रहती थी।[15]

133 ई.पू. में अत्तालिद के राजवंश के अन्तिम शासक ने परगमुम का राज्य रोमी सीनेट और रोमी लोगों को वसीयत में दे दिया। उस समय कुलुस्से को रोमी इलाके के रूप में फिर से बनाया गया था। इसके बाद इसे और फ्रूगिया के अन्य नगरों की कोई राजनैतिक महत्व की स्वतन्त्रता बरकरार न रही।

मसीही युग के आरम्भ तक कुलुस्से एक महत्वहीन नगर बन गया था जिसका स्थान लौदीकिया और हियरापुलिस ने ले लिया था। भूगोलशास्त्री स्ट्रेबो ने मसीह के समय आस पास लिखते समय इसे ''एक छोटा कस्बा'' बताया।[16]

सांस्कृतिक और धार्मिक दोनों प्रकार से कुलुस्से अलग था। यह पश्चिम और पूर्व के बीच के मुख्य व्यापार मार्ग पर था इस कारण पश्चिमी और पूर्वी दोनों संस्कृतियों की फ़िलॉसफ़ियों का प्रभाव इस पर था। आसिया और फ्रूगिया (जिसमें कुलुस्से भी होगा) के यहूदी पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में थे (प्रेरितों 2:9, 10)। इसलिए यह मान लेना आसान है कि कुलुस्से की कलीसिया में यहूदी मत से बने मसीही भी थे। कुलुस्सियों 2:16 में पौलुस का यहूदी रीतियों की बात करना इस निष्कर्ष को पक्का करता है।

काफ़िरों की देवी सिबेले की पूजा लूकस तराई में बहुत अधिक होती थी और सम्भवतया कुलुस्से में भी थी। कुलुस्से से मिले सिक्कों से पता चलता है कि रोमी साम्राज्य के दौरान लोग (लगभग 27 ई.पू.—180 ईस्वी)[17] में लोग स्थानीय देव मनुष्यों के साथ-साथ आइसिस, सेनापिस, हेलियोस, डिमेटर, सिलेनी, इफिसुस की अरितमिस और शिकारिन अरितमिस की पूजा करते थे। लगता है कि मसीही बनने वाले बहुत से लोग मूर्तिपूजा में से परिवर्तित हुए थे (कुलुस्सियों 1:21)। कुलुस्सियों के कुछ लोगों के नामों से इस विचार को वज़न मिल सकता है कि मूर्तिपूजा की पृष्ठभूमि वाले कुछ लोग मसीही बने थे।[18]

आज कुलुस्से तुर्की में एक खण्डहर बना ढेर है। आज तक इसकी खुदाई नहीं हुई है। ढेर के लगभग तीन मील उत्तर पश्चिम में एसकिसेयर से डैनिज़ी को सड़क से कुछ दूरी पर होनाज़ नामक एक गांव है।

विधर्म की समस्या

कुलुस्सियों के पत्र में एक ज़ोरदार संदेश है परन्तु कुलुस्से की कलीसिया में कौन सी समस्याएं खड़ी हुई थीं इस पर अनिश्चतता रहती है। क्या कलीसिया में कोई विशेष गलातियां आ गई थीं या पौलुस सामान्य अर्थ में झूठी शिक्षा की सम्भावना के विरुद्ध चेतावनी दे रहा था?

पौलुस के कहने का अर्थ था कि कुलुस्से की कलीसिया एक समर्पित और बढ़ने वाली मण्डली थी। इसके सदस्यों को उसने ''पवित्र'' लोग और ''विश्वासी'' कहा (1:2)। मसीह में उनके विश्वास और सब पवित्र लोगों के लिए उनके प्रेम की चर्चा दूर-दूर तक थी (1:4)। कुलुस्से के लोग फल ला रहे थे (1:6)। वे राज्य में थे (1:13), परमेश्वर से मिलाए जा रहे थे (1:22)। उन्हें बपतिस्मा दिया गया था (2:12) और मसीह के साथ जिलाए गए थे (2:13)। वे मसीह में छिपे हुए (3:3), चुने हुए और उन से प्रेम किया गया (3:12), और एक देह में थे (3:15)। पौलुस ने यह संकेत नहीं दिया कि वे किसी प्रकार के दुराचार या डॉक्ट्रिन यानी शिक्षा से भटके थे।

इपफ्रास ने पौलुस को कलीसिया की स्थिति के बारे में बताया था (1:7, 8)। सदस्यों की चाहे उसने अच्छी रिपोर्ट दी थी, शायद उसने उनकी सोच में समस्याएं भी देखी थीं। ये भाई हो सकता है कि अभी सच्चाई से दूर न गए हों परन्तु पौलुस कम से कम उन्हें भटकने से रोकने के लिए चेतावनी दे रहा था।

पत्र के एक छोटे भाग में पौलुस ने सुसमाचार से किसी भी प्रकार के भटकने के विरुद्ध चेतावनियां दीं (2:4-23)। ये चेतावनियां चाहे विशेष रीतियों के विषय में थीं परन्तु पौलुस ने यह संकेत नहीं दिया कि किसी ने वहां ऐसी समस्याओं को बढ़ावा दिया था। यह जानते हुए कि उनकी संस्कृति उनके प्रति ज़ोरदार आकर्षण रखती है, वह उन्हें मसीह में बने रहने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हो सकता है।

(1) *शायद पौलुस ने यह पत्र नॉस्टिक शिक्षाओं का उत्तर देने के लिए लिखा।* कुछ समय तक नॉस्टिकवाद को विधर्म माना जाता था जिसकी पौलुस बात कर रहा था, परन्तु अधिकतर टीकाकारों द्वारा इस विचार को त्याग दिया गया है। नॉस्टिकवाद दूसरी सदी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ था। पीटर टून ने इस शिक्षा के प्रमुख पहलुओं को इस प्रकार वर्णन किया है:

> सच्चा परमेश्वर विशुद्ध आत्मा है और विशुद्ध प्रकाश के क्षेत्र में वास करता है जो पूरी तरह से अंधकार भरे संसार से अलग है। संसार बुरा है, क्योंकि यह तत्व से बना है और तत्व बुरा है। सच्चे परमेश्वर का इससे कोई सम्बन्ध नहीं होगा, क्योंकि इसे किसी कम ईश्वर द्वारा रचा गया था और यह एक गलती थी। इस संसार के लोग आम तौर पर देह और मन के बने होते हैं, परन्तु कुछ में ही विशुद्ध आत्मा की चिंगारी होती है। ऐसे ''आत्मिक'' लोगों को इस बुरे संसार से बचने की आवश्यकता है; इस कारण उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। यीशु जो कि विशुद्ध आत्मा है जो चाहे शरीर और मन लगता है, परन्तु वह उद्धारकर्त्ता है जो सच्चे परमेश्वर की ओर से जो ज्योति में है ज्योति की सच्चे परमेश्वर की ओर से ज्योति के आत्मिक क्षेत्र का ज्ञान (*gnosis*) लाने के लिए आता है। इसलिए जिन के अन्दर आत्मा की चिंगारी है वे ज्ञान को स्वीकार करके सच्चे परमेश्वर के साथ फिर से जुड़ जाएंगे।[19]

नॉस्टिक लोगों का मानना था कि भौतिक संसार पूरी तरह से बुराई है और पूरी तरह से आत्मा के संसार से अलग है। इसके परिणाम में दो अलग-अलग विचार बनें, जिसमें फ़िलॉसफ़ी

का सिद्धांत है जो तत्व को भलाई और आत्मिकता का विरोधी नियम बताता है। इस फ़िलॉसफ़ी के अनुसार परमेश्वर (जो पूर्णतया भला है) ने तत्व को (जो बुराई है) नहीं बनाया होगा। नॉस्टिकवाद ने यह प्रस्ताव दिया कि अन्य देवते जो नीचे की ओर घूमते हुए निकले थे और इनमें से किसी अधीन देवता ने संसार की रचना की। अन्य आत्मिक जीवों के सहयोग से उसने भौतिक अस्तित्व में मनुष्यजाति की आत्माओं को कैद कर लिया होगा, जिससे लोग आत्मिक अस्तित्व में बचने की इच्छा करते हैं। हर कोई नहीं मानता था कि भौतिक अस्तित्व से निकलने के लिए आत्मिक चिंगारी का होना आवश्यक है। मृत्यु के समय केवल सच्चा ज्ञान होने वालों के लिए ही भौतिक को छोड़ आत्मिक अस्तित्व में कहीं जाने की बात कही जाती थी।

नॉस्टिक लोग यीशु की ऐतिहासिक मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने सहित उसके शारीरिक अस्तित्व का इनकार करते थे। उनकी सोच में था कि उद्धार का अर्थ पाप से उद्धार नहीं, बल्कि शारीरिक अस्तित्व से छुटकारा है।

(2) *पौलुस सम्भवतया एसेनियों की शिक्षा की ही बात कर रहा था।* कुलुस्सियों पर अपनी शानदार टीका में जे. डी. लाइटफुट ने एक यहूदी सम्प्रदाय ऐसेनियों की शिक्षाओं के एक मामले की बात बताई जिसमें एक मुख्य विधर्म जो कुलुस्से की कलीसिया में आ गया था बताया गया।[20] कुलुस्सियों और एसेनीवाद में समानताएं बताते हुए डोनल्ड गुथरी ने लिखा है, ''लाइटफुट की थ्योरी चाहे स्वीकार नहीं की जाती, परन्तु यह बिना इनकार किए कि यह विधर्म दूसरी शताब्दी के विकसित नॉस्टिकवाद के बजाय एसेनीवाद से मेल खाता है।''[21]

(3) *कुलुस्सियों को यीशु के सम्बन्ध में गलत शिक्षा दिए जाने पर परेशानी होती होगी।* पौलुस ने यीशु की प्रकृति पर ज़ोर दिया। न केवल वह परमेश्वर के स्वरूप पर है (1:15), बल्कि वह हर बात में सृष्टिकर्त्ता भी है (1:16, 17)। सब बातों में उसे प्राथमिकता दी गई है। वह कलीसिया के ऊपर सिर है और सारी परिपूर्णता उसी में है (1:18)। उसमें परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करती है (2:9)।

(4) *कुछ मसीही लोग फ़िलॉसफ़ी की ओर मुड़ गए हो सकते हैं* (2:8)। पौलुस ने कुलुस्सियों को विश्वास दिलाया कि उन्हें यीशु को छोड़ किसी और शिक्षा या सिखाने वाले की आवश्यकता नहीं है। उस में मसीही लोग पूर्ण होते हैं (2:10)।

(5) *कुछ लोग यहूदी विचार से प्रभावित हुए हो सकते हैं।* यदि ऐसा हुआ तो उन्होंने सोचा होगा कि क्षमा व्यवस्था को मानने के द्वारा मिली है। पौलुस की बात कि यीशु ने उन्हें पापों से छुड़ाया और व्यवस्था की विधियों को मिटा डाला (2:12-16)। यहूदी शिक्षा का उत्तर हो सकती है।

(6) *कुछ यहूदी गुरुओं के प्रभाव में कुछ लोग स्वर्गदूतों की उपासना कर रहे हो सकते हैं* (2:18)। एफ़. एफ. ब्रूस ने स्वर्गदूतों के प्रति फ्रूगिया के क्षेत्र में यहूदियों के व्यवहार पर चर्चा की है:

> परमेश्वर और मनुष्य के बीच संचार की तारें [स्वर्गदूतों] के हाथ में होती हैं इसलिए मनुष्य को परमेश्वर की ओर से मिला सारा प्रकाशन और मनुष्य की ओर से परमेश्वर के सामने की गई सारी प्रार्थना और आराधना अपने लक्ष्य तक तभी पहुंच सकती है यदि

> यह उनके माध्यम से और उनकी अनुमति से की जाए। इसलिए यह समझदारी की बात लगी कि उनकी साख का लाभ दिया जाए और जैसा वे चाहते हैं वैसा ही किया जाए।[22]

इसके अलावा उन्हें लगा कि परमेश्वर ने व्यवस्था देने के लिए माध्यमों के रूप में स्वर्गदूतों का इस्तेमाल किया। इस कारण व्यवस्था को मानने का अर्थ उन्हें सम्मान देना होगा जबकि व्यवस्था को तोड़ने का अर्थ उन्हें नाराज़ करना होगा। इस शिक्षा के अनुसार व्यवस्था की आज्ञा मानकर और कठोर शारीरिक संयम के द्वारा स्वर्गदूतों को सन्तुष्ट किया जाए।

(7) *कुछ लोगों ने जीवन के भौतिकवादी विचार को मान लिया हो सकता है।* यदि उनका ढंग यह था तो पौलुस इसे ''संसार की आधी शिक्षा'' शब्द में बता रहा था (2:8)। कुछ लोग मूर्तियों की पूजा करने से बाहर निकले हैं (जिसमें सैक्स के संस्कार भी थे)। नैतिकता के सम्बन्ध में मूर्तिपूजा की फ़िलॉसफ़ी कोई ठोस मानक नहीं देती थी जो सांसारिकता से लड़ सके। 3:3-9 में पौलुस की चिंता का यह एक भाग हो सकता है।

(8) *पौलुस ने सम्भवतया समन्वयवाद की समस्या के विषय में लिखा,* यानी यहूदी रहस्यवाद, फ़िलॉसफ़ी, मूर्तिपूजा के रहस्यमयी सम्प्रदायों के विभिन्न विश्वासों और धार्मिक शिक्षा का मेल। कलिन्टन ई. आरनॉल्ड ने निष्कर्ष निकाला कि समस्या यह थी:

> कुलुस्सियों का पत्र विरोधी शिक्षा की धमकी के कारण लिखा गया जो प्रेरित को कलीसिया के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक और मसीह की प्रतिष्ठा कम करने वाली लगी। यह समन्वयवादी ''फ़िलॉसफ़ी'' कुलुस्सियों के लिए लुभाने वाली थी क्योंकि इस में रसातली [अपराध लोक] आत्माओं, प्रेम [आकाशीय] स्वर्गीय [शक्तियों] और हर प्रकार की बुरी आत्मा के हानिकारक प्रभाव से बचने के अतिरिक्त माध्यम देती थी।[23]

बेशक हमें पक्का पता नहीं है कि जिन विधर्मों की यहां बात की गई है उन में से कोई कुलुस्से की कलीसिया में पाया था या नहीं, परन्तु पौलुस के पत्र से ऊपर लिखित समस्याओं में से किसी से भी निपटने के लिए शिक्षाएं दी गईं।

उद्देश्य और प्रमुख विषय

उद्देश्य

पत्र का उद्देश्य किसी के कुलुस्से के विधर्म पर विचार पर निर्भर है। यदि कुलुस्से की कलीसिया में विधर्म बन चुका था तो पत्र लिखने का पौलुस का उद्देश्य उन्हें मसीह में विश्वासी बने रहने की चेतावनी देना था। यदि विधर्म अभी नहीं बढ़ा था तो उसने उन्हें मसीह से न भटकने की चेतावनी देने के लिए लिखा कि वह सबसे ऊपर है और मसीही लोगों को केवल इसी की आवश्यकता है।

पौलुस किसी भी झूठी शिक्षा को जो उन्हें यीशु से दूर ले जाए रोकने का इच्छुक था। कलीसिया नई-नई थी। सदस्यों को उन खतरों के प्रति चौकस करना आवश्यक था जिनका सामना उन्हें करना पड़ सकता था। उन्होंने यीशु को आनन्द के साथ प्रभु माना था और लगता था

कि वे विश्वासयोग्य मसीही जीवन के मार्ग पर हैं; परन्तु आगे खतरे थे। कुछ लोग उन्हें यीशु की शिक्षाओं से बढ़कर स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशिश कर सकते थे। सदस्य यह कहना आरम्भ कर सकते थे कि यीशु परमेश्वर से कम है और खतरे जो आ सकते थे, वे भौतिकतावाद या दुराचार या आत्मिकता की कमी थी।

पौलुस का उद्देश्य मसीह के होने पर ज़ोर देना था। कोई भी शिक्षा जो उसकी ओर से नहीं है, वह विनाशकारी है। वह पूर्णतया परमेश्वर है और मसीही व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस कारण पौलुस ने उन्हें यहूदी और काफ़िर संस्कृतियों के आकर्षण या यूनानी फ़िलॉसफ़ियों से, जिनसे उन्हें बचाया गया था प्रभावित न होने की चेतावनी दी। उसने उन्हें संसार की अनैतिक रीतियों से मरे हुए रहने और स्वर्गीय बातों के लिए जीवित होने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके सामने ठहराया गया उसका लक्ष्य ऊपर की बातों पर ध्यान लगाना और अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को वफ़ादारी से पूरा करना था।

पत्र उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिए प्रोत्साहित करने वाले कवच के रूप में और किसी भी और रीति से बचाने के लिए भेजा गया। पौलुस ने उन्हें मसीह के प्रति वफ़ादार रहने और अपनी संस्कृति की अधार्मिक फ़िलॉसफ़ियों और परम्पराओं और रीतियों से बचने की चुनौती दी।

मुख्य विषय

कुलुस्सियों की पुस्तक चाहे एक छोटी पुस्तक है पर इसमें बाइबल के कई महत्वपूर्ण विषय पाए जाते हैं। इसमें बहुत कम बातें हैं जो नये नियम में और जगहों में नहीं मिलती हैं। यह डॉक्ट्रिन, नैतिक और सामाजिक समस्याओं में से कई जो कुलुस्से की मण्डली में थी और मसीही लोगों की आगामी पीढ़ियों को प्रभावित किया, की चर्चाओं को संक्षिप्त करती है। इसको ध्यान में रखते हुए पुस्तक के पांच प्रमुख विषय हैं:

(1) *पौलुस और भाई।* पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में अपने कई सहयात्रियों का नाम लिया: तीमुथियुस, इपफ्रास, अरिस्तर्खुस, मरकुस, बरनबास, यूस्तुस, लूका और देमास (1:1; 4:10-14)। उसने उनकी जो उसके साथ थे, चिंता और लगाव के साथ-साथ यीशु के पीछे चलने वालों के लिए अपने प्रेम को दिखाया।

पौलुस की दिलचस्पी न केवल उन लोगों में थी, जिन्हें वह जानता था बल्कि वह उन साथी मसीही लोगों के प्रति भी जिन्हें उसने कभी देखा नहीं था अपना दायित्व समझता था। वह कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना करता रहा और उन में आत्मिक विकास को बढ़ते और मसीह के प्रति सच्चे समर्पण को देखना चाहता था (1:1-14)। उसने इस उम्मीद से दुख उठाए कि सब विश्वासियों को परिपक्व और मज़बूत करे और यीशु में मिलने वाली परमेश्वर की आशिषों के रहस्य को खोए हुए लोगों के साथ बांटे (1:24-29)।

(2) *ऊंचा किया गया मसीह।* पौलुस के अनुसार सारी सच्ची शिक्षा का आधार यीशु की महानता और अधिकार है। उस में परमेश्वर का स्वरूप है, वह सृष्टि कर्त्ता है, सब पर राज करता है और कलीसिया का सिर है (1:15-18)। क्रूस पर बहे अपने लहू के द्वारा उसने परमेश्वर के साथ मेल सम्भव बना दिया है (1:20-23)। सारी वास्तविक समझ और ज्ञान (2:3) और परमेश्वरत्व की परिपूर्णता मसीह में हैं (2:9, 10)। मसीह से सम्बन्धित इन सच्चाइयों को पौलुस ने

कुलुस्सियों को मानवीय समझ और शिक्षाओं में न लौट जाने की चेतावनी देने के लिए बताईं। उन्हें यीशु के वफ़ादार रहना, उसमें बने रहना और मनुष्यों की फ़िलॉसफ़ियां और नियमों या रहस्यमय धार्मिक रीतियों का पालन करके अपने प्रतिफल को खोना नहीं था (2:4-8, 18-23) । न ही जीने के लिए व्यवस्था उनका मार्गदर्शक होनी थी, क्योंकि इसे यीशु के क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया था (2:14-17)।

(3) *मसीह में नया।* मसीह के सर्वशक्तिमान होने के कारण कुलुस्सियों को बपतिस्मे में उसके साथ दफ़नाए जाकर और जी उठकर ताकि उनके पाप क्षमा किए जा सकें नये बनाया गया था (2:11-13)। यीशु के साथ उनकी भागीदारी जीवन बदलने वाला प्रभाव होना था। वे मसीह के साथ मर गए थे (2:20) और उसके साथ जिलाए गए थे (3:1-3)। इस कारण जीवन में उनकी दिशा और उद्देश्य बदल जाने थे। जीने का उनका ढंग अलग होना था। उन्हें अनैतिक रीतियों को बंद करके अधार्मिक कामों पर जय पानी थी (3:5-9)। उन्हें वे गुण अपनाने थे जो यीशु में पाए जाते थे (3:10-14)। इसका परिणाम एक देह में एक होना था (3:15)।

मसीह में बड़ी-बड़ी आशिषें पाने के बाद कुलुस्से के लोग अपने दिलों के साथ गीत गाते हुए परमेश्वर की महिमा कर सकते थे (3:16)। उन्हें केवल शब्दों से ही नहीं बल्कि अपने कामों से भी मसीह को प्रसन्न करना आवश्यक था (3:17)।

(4) *घरेलू विचार।* दूसरों के साथ उनके सम्बन्ध यीशु के नियमों के द्वारा चलाए जाने थे। घरों में पतियों को अगुवे होना था, पत्नियों को अपने पतियों के साथ सहयोग करना था, बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानना था, सेवकों को अपने स्वामियों की आज्ञा मानना था और स्वामियों को अपने दासों के साथ ईमानदारी के साथ और निष्कपटता के साथ व्यवहार करना था (3:18—4:1)।

(5) *मसीह में क्षमा।* 1:14 में पौलुस ने पापों की क्षमा का परिचय दिया और 2:11-13 में उस क्षमा में आने पर चर्चा की। उसने मरकुस और लूका नामक दो परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों का नाम लिया (4:10, 14), जिन्होंने सुसमाचार के विवरण लिखे थे। उनके लेखों में इस महान विषय के सम्बन्ध में यीशु और आरम्भिक कलीसिया की शिक्षाएं हैं।

कुलुस्सियों के ध्यान से अध्ययन के द्वारा मसीही लोगों को यीशु की गहराई से समझ हो जानी चाहिए, जिससे वे उसके पीछे चलने को प्रेरित हों। जो कुछ वह है और जो कुछ उसने हमारे लिए किया ताकि हम प्रसन्न हो सकें और यहां पर हमें उपयोगी जीवन मिल सके और स्वर्ग में हम उसके साथ रह सकें। हमें उसका आदर करने लग पड़ना चाहिए।

रूपरेखा

I. सलाम (1:1, 2)
   क. पौलुस और तीमुथियुस की ओर से (1:1)
   ख. कुलुस्से के विश्वासी भाइयों के नाम (1:2)

II. कुलुस्सियों के लिए पौलुस का धन्यवाद (1:3-8)
   क. धन्यवाद की एक प्रार्थना (1:3)

ख. उनका विश्वास और प्रेम (1:4)
ग. स्वर्ग की उनकी आशा (1:5)
घ. उनके विश्वास से मिलने वाला फल (1:6)
ङ. इपफ्रास की रिपोर्ट (1:7, 8)

III. कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना (1:9-14)
क. उनका ज्ञान और आत्मिक समझ (1:9)
ख. उनका मसीही चलन और फल लाना (1:10)
ग. उनकी आत्मिक शक्ति (1:11, 12)
घ. ज्योति के राज्य में उनका प्रवेश (1:12ख, 13)
ङ. मसीह में उनकी और हमारी क्षमा (1:14)

IV. मसीह की महानता का एक विवरण (1:15-20)
क. अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा (1:15)
ख. सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता (1:16)
ग. जो सब वस्तुओं को बनाए रखता है (1:17)
घ. कलीसिया का सिर और सर्वश्रेष्ठ (1:18, 19)
1. कलीसिया का सिर (1:18)
2. सृष्टि का देने वाला (1:18)
3. मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा (1:18)
4. सब बातों में प्रधान (1:18)
5. सारी परिपूर्णता उसी में (1:19)
ङ. मेल मिलाप का आधार (1:20)

V. मसीह के द्वारा मेल मिलाप का पौलुस का आश्वासन (1:21-23)
क. पौलुस की पहली स्थिति (1:21)
ख. मसीह की मृत्यु के द्वारा उन का मेल (1:22)
ग. उनके लिए आवश्यक वफ़ादारी (1:23)

VI. कुलुस्सियों के लिए पौलुस के परिश्रम (1:24-29)
क. उसका आनन्द: उनके लिए दुख सहना (1:24)
ख. उन पर भेद प्रकट किया गया (1:25-27)
ग. उनके लिए उसका लक्ष्य: मसीह में परिपूर्णता (1:28, 29)

VII. पौलुस की घोषणा: समझ और ज्ञान का देने वाला मसीह (2:1-7)
क. उसकी इच्छा: परमेश्वर के भेद की उनकी पूरी समझ (2:1, 2)

ख. उसका प्रकाशन: सारी समझ और ज्ञान मसीह में (2:3, 4)
ग. उसका आनन्द: मसीह में उनका विश्वास (2:5)
घ. उसकी ताड़ना: जैसे उन्होंने मसीह को ग्रहण किया था वैसे ही उसमें चलें (2:6)
ङ. उसका प्रोत्साहन: मसीह में दृढ़ होना (2:7)

VIII. मसीह की परिपूर्णता की पौलुस की तस्वीर (2:8-15)
क. मनुष्यों की शिक्षाओं का अहेर न बनने की चेतावनी (2:8)
ख. परमेश्वर मसीह में देहधारी हुआ (2:9)
ग. मसीह में परिपूर्णता (2:10, 11)
घ. जीवन और क्षमा मसीह में (2:12, 13)
ङ. व्यवस्था की विधियों से छुटकारा मसीह में (2:14)
च. मसीह द्वारा दिखाया गया विरोध (2:15)

IX. सिर के साथ जुड़े रहने की पौलुस की ताड़ना (2:16-23)
क. व्यवस्था के बजाय मसीह की पीछे चलना (2:16, 17)
ख. मनुष्यों की रीतियों से बचना (2:18, 19)
ग. संसार के नियमों से मसीह के साथ मर जाना (2:20-23)

X. मसीह में नये जीवन की एक परिभाषा (3:1-14)
क. ऊपर की वस्तुओं की इच्छा करना (3:1-4)
ख. अपने अनैतिक अतीत को मार डालना (3:5-7)
ग. अभक्तिपूर्ण व्यवहार को उतार फैंकना (3:8, 9)
घ. मसीह के स्वरूप में नये हो जाना (3:10, 11)
ङ. भक्ति के गुणों को पहन लेना (3:12-14)

XI. मसीह को उत्तर (3:15-17)
क. उसकी शान्ति को ग्रहण करना (3:15)
ख. गाने के साथ उसकी आराधना करना (3:16)
ग. सब कुछ उसी के नाम में करना (3:17)

XII. सम्बन्धों में जिम्मेदारियां (3:18—4:1)
क. पतियों के लिए पत्नियों की (3:18)
ख. पत्नियों के लिए पतियों की (3:19)
ग. माता-पिता के लिए बच्चों की (3:20)
घ. बच्चों के लिए माता-पिता की (3:21)

ङ. स्वामियों के लिए दासों की (3:22-25)

च. दासों के लिए स्वामियों की (4:1)

XIII. अन्तिम टिप्पणियां (4:2-18)

क. ताड़नाएं (4:2-6)

1. प्रार्थना करने की, विशेषकर पौलुस के लिए (4:2-4)
2. बाहर वालों के प्रति समझदारी से काम करने की (4:5, 6)

ख. निर्देश और सिफ़ारिशें (4:7-9)

1. तुखिकुस के सम्बन्ध में (4:7, 8)
2. उनेसिफुस के सम्बन्ध में (4:9)

ग. सलाम और टिप्पणियां (4:10-18)

1. सहकर्मियों की ओर से सलाम (4:10-14)
   क. यहूदी मसीही लोगों की ओर से (4:10, 11)
   ख. अन्यजाति मसीही लोगों की ओर से (4:12-14)
2. सलाम और भाइयों के लिए टिप्पणियां (4:15-17)
   क. लौदीकिया के लोगों और नुमफास के नाम (4:15)
   ख. पौलुस के पत्र पढ़े जाने के सम्बन्ध में (4:16)
   ग. अर्खिप्पुस के नाम (4:17)
3. अन्तिम टिप्पणियां (4:18)

टिप्पणियां

[1]अरनेस्ट थियोडोर मेयरहॉफ, *डेर ब्रीफ एन डाई कोलोसर, मिट वारनेमिलिचर बेरिकसिचिगुंग डेर ट्रे पास्टरलब्रीफ, क्रिटिस ग्रेपरुफट* (बर्लिन: हरमन, सुज़ 1838)। [2]हेनरी क्लेरेंस थियसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1943), 229-30. [3]डोनल्ड गुथरी, *न्यू टैस्टामेंट इंट्रोडक्शन,* 3रा संस्क., संशो. (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1970), 554. [4]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा ने कुलुस्सियों और इफिसियों के बीच सम्बन्ध पर चर्चा की: ''कुलुस्सियों थोड़ा बहुत इफिसियों से भी सम्बन्धित है। दोनों पत्रों की सामग्रियों के बीच स्पष्ट समानताओं के अलावा पौलुस जेल में भी है [इफिसियों 6:20], और तुखिकुस को वैसे ही कमिशन देकर कि पाठकों को बताए कि पौलुस के साथ क्या चल रहा है यह पत्र देकर तुखिकुस को भेजा जा रहा है [इफिसियों 6:21, 22]'' (रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हेल्प्स फॉर ट्रांसलेटर्स [न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटी, 1977], 1)। [5]इन समानताओं पर अतिरिक्त अध्ययन के लिए, देखें एच.सी. जी. माउल, *द एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस 1893; रिप्रिंट, 1902), 47-49. [6]करटिस वॉन, *कोलोसियंस एंड फिलेमान,* बाइबल स्टडी कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1980), 15. [7]क्रिसोस्टोम *कोलोसियंस 1.* एवरेट फर्ग्यूसन, *अर्ली क्रिश्चियंस स्पीक* (अबिलेन टैक्सस: बिब्लिकल रिचर्स प्रैस 1981), 244; और राल्फ पी. मार्टिन, *कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 217 भी देखें। [8]इन तिथियों पर और अध्ययन के लिए, देखें कॉलिन जे. हेमर, *द बुक ऑफ एक्ट्स इन द सैटिंग ऑफ़ हेलेनिस्टिक हिस्ट्री,* संपा. कोनर्ड एच. जेम्फ (विनोना लेक, इंडियाना: ईसनब्राउन्ज़ 1990), 169-71. [9]प्लिनी *नेचुरल हिस्ट्री*

21.51. [10]टेसिटुस *एन्नल्स* 14.27.

[11]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया, संशो., सम्पा. ज्योफ़्री डब्ल्यू .ब्रोमिले* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:732 में ई. जे. बैंक्स, ''कोलोसे''। [12]सैक्सोफोन *अनाबेसिस* 1.2.6. [13]हेरोदोतस *हिस्ट्रीज़* 7.30. [14]जोसेफस *एन्टिक्विटीस ऑफ़ द ज्यूस* 12.3.4. [15]देखें जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल 'स एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 20. [16]स्ट्राबो जोग्रफी 12.8.13. [17]रोमी साम्राज्य औपचारिक रूप में जनवरी 16, 27 ई.पू. को आरम्भ हुआ, द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., ज्योफ़्री ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:208 में बी. सी. देखें अंगुस एंड ए. एस. रेनविक, ''रोमन एम्पायर।'' [18]''कुलुस्सियों की पुस्तक में दिए गए कम से कम तीन मसीही लोगों के नामों में काफ़िर देवताओं का संकेत है: तुखिकुस (यू. Tuche=भाग्य), इपफ्रास (अफ्रोदी से सम्बन्धित, इपफ्रोदितुस का लघु रूप) और नुमफास (... निम्फादोरा, 'जल-परियों का उपहार' से)'' (डेविड एम. हे, *कोलोसियंस,* अबिंग्डन न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 2000], 25)। [19]*द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल,* संपा. मैरिल. सी. टेनी, संशो. जे. डी. डग्लस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 393 में पीटर टून, ''नॉस्टिसिज़्म।'' [20]लाइटफुट, 71–111. लाइटफुट ने मृत सागर के पत्रों पर आधारित एसेनीवाद के सम्बन्ध में यह तर्क नहीं दिया, क्योंकि उसने इनकी खोज से पहले लिखा था।

[21]गुथरी, 550. [22]ई.के. सिम्पसन एंड एफ़. एफ. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल्स टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 167. [23]क्लिंटन ई. अरनोल्ड, *द कोलोसियन सिंक्रेटिज़्म* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1996), 308.